وَإِذْ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ لَمَآ ءَاتَيْتُكُم مِّن كِتَٰبٍ
وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ
بِهِۦ وَلَتَنصُرُنَّهُۥۚ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِىۖ
قَالُوٓاْ أَقْرَرْنَاۚ قَالَ فَٱشْهَدُواْ وَأَنَا۠ مَعَكُم مِّنَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿٨١﴾
فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ
ٱللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُۥٓ أَسْلَمَ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ طَوْعًا
وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾ قُلْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ عَلَيْنَا
وَمَآ أُنزِلَ عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ
وَٱلْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِىَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا
نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَن يَبْتَغِ
غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ
ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِى ٱللَّهُ قَوْمًا كَفَرُواْ بَعْدَ إِيمَٰنِهِمْ
وَشَهِدُوٓاْ أَنَّ ٱلرَّسُولَ حَقٌّ وَجَآءَهُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُۚ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى
ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٨٦﴾ أُوْلَٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ ٱللَّهِ
وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾ خَٰلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمُ ٱلْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُواْ مِنۢ بَعْدِ
ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُواْ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٨٩﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ
بَعْدَ إِيمَٰنِهِمْ ثُمَّ ٱزْدَادُواْ كُفْرًا لَّن تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُوْلَٰٓئِكَ
هُمُ ٱلضَّآلُّونَ ﴿٩٠﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَمَاتُواْ وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن

يُقۡبَلَ مِنۡ أَحَدِهِم مِّلۡءُ ٱلۡأَرۡضِ ذَهَبٗا وَلَوِ ٱفۡتَدَىٰ بِهِۦٓۗ
أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمٞ وَمَا لَهُم مِّن نَّٰصِرِينَ ٩١

Theme	
The covenant of Allah with all the Prophets concerning the Last Prophet (Muhammad). No religion is acceptable to Allah other than Al-Islam. The reward for the disbelievers is the curse of Allah, the Angels and all mankind. Disbeliever who die as a disbelievers will have an everlasting painful punishment.	तमाम अम्बियाؑ से आख़िरी नबी (मुहम्मद ﷺ) के बारे में अल्लाह तआला का अहद। अल्लाह तआला के नज़दीक इस्लाम के सिवा कोई दीन क़ाबिल-ए-क़बूल नहीं। काफ़िरों की जज़ा अल्लाह तआला, फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की लानत है। जो लोग कुफ़्र की हालत में मर जाएँगे, उनके लिए हमेशा रहने वाला दर्दनाक अज़ाब है।
Tarjumani	
Remember, when Allah took the covenant of the Prophets, saying: "Now that you have been given the Book and Wisdom; there will come to you a Rasool who will confirm that which is with you, you will have to believe in him and help him in his mission." Then He said "Do you affirm this covenant and agree to take this heavy responsibility?" They replied, "Yes, we do affirm."	याद करो, अल्लाह ने पैगम्बरों से अहद लिया था कि " आज मैंने तुम्हें किताब और हिकमत व दानिश से नवाज़ा है, कल अगर कोई दूसरा रसुल तुम्हारे पास उसी तालीम की तस्दीक करता हुआ आए जो पहले से तुम्हारे पास मौजूदा है, तो तुमको उसपर ईमान लाना होगा और उसकी मदद करनी होगी |" यह इरशाद फरमाकर अल्लाह ने पूछा, "क्या तुम इसका इकरार करते हो और इसपर मेरी तरफ़ से अहद की भरी

Allah said, "Very well, bear witness to this and I too bear witness with you. So, if anyone turns back after this, he will become the transgressor. Are they looking for a religion other than the Deen (religion and Way of Life) of Allah knowing well that everything in the heavens and in the earth, willingly or unwillingly, has submitted to Him? And to Him, they shall all return. O Prophet, say: "We believe in Allah and what is revealed to us and what was revealed to Ibraheem (Abraham), Isma'il (Ishmael), Ishaq (Isaac), Yaqoob (Jacob) and the Descendants (the Prophets who were the off spring of Jacob); and in that which was given to Musa (Moses), Isa (Jesus) and other Prophets from their Rabb; we do not discriminate between any one of them, and to Allah do we submit ourselves as Muslims. If anyone is looking for a religion other than Islam, then let it be known that it will not be accepted from him; and	ज़िम्मेदारी उठाते हो?" उन्होंने कहा, "हाँ हम इकरार करते हैं |" अल्लाह ने फ़रमाया, "अच्छा तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ, इसके बाद जो अपने अह्द से फिर जाए वही फ़ासिक है |" अब क्या ये लोग अल्लाह की इताअत का तरीका (दीनुल्लाह) छोड़कर कोई और तरीका चाहते हैं? हालाँकि आसमानों व ज़मीन की सारी चीज़ें चारो-नाचार अल्लाह ही के ताबे-फ़रमान (मुस्लिम) हैं और उसी की तरफ़ सबको पलटना है	ऐ नबी, कहो कि "हम अल्लाह को मानते हैं, उस तालीम को मानते हैं जो हमपर नाज़िल की गई है, उन तालीमात को भी मानते हैं जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक, याक़ूब और औलादे-याक़ूब पर नाज़िल हुई थीं, और उन हिदायातपर भी ईमान रखते हैं जो मूसा और ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को उनके रब की तरफ़ से दी गई	हम उनके दरमियान फ़र्क नहीं करते और हम अल्लाह के ताबे-फ़रमान (मुस्लिम) हैं |" इस फारमाँबरदारी (इस्लाम) के सिवा जो शख्त कोई और तरीका इखतियार करना चाहे उसका वह तरीका हरगिज़ कबूल न किया जाएगा और आख़िरत में वह

in the Hereafter, he will be among the losers. How can it be that Allah would guide those people who commit Kufr (reject faith) after their Iman (acceptance of faith), bearing witness that the Rasool is true, and clear proofs have come to them? Allah does not guide such wrongdoers. The reward of such people is that upon them is the curse of Allah, the angels and all mankind. They shall remain under it forever, neither will their punishment be lightened nor will they be given respite, except those who repent after this and mend their ways, verily Allah is Forgiving, Merciful. Surely, those who disbelieve after their belief (acceptance of Islam) then go on adding to their disbelief, their repentance will never be accepted; because they intentionally chose to go astray. Surely, those who are unbelievers and died while they were unbelievers, if they were to fill the whole earth with gold and offer it as a ransom for	नाकाम व नामुराद रहेगा | कैसे हो सकता है कि अल्लाह उन लोगों को हिदायत बख्शे जिन्होंने नेमते-ईमान पा लेने के बाद फिर कुफ़्र इखतियार किया हालाँकि वे ख़ुद इस बात पर गवाही दे चुके हैं कि यह रसुल हक़ पर है और उनके पास रौशन निशानियाँ भी आ चुकी हैं | अल्लाह ज़ालिमों को तो हिदायत नहीं दिया करता | उनके ज़ुल्म का सही बदला यही है कि उनपर अल्लाह और फरिश्तों और तमाम इंसानों की फिटकार है, इसी हालत में वे हमेशा रहेंगे, न उनकी सज़ा में ताखफीफ़ होगी और न उन्हें मुहलत दी जाएगी | अलबत्ता वे लोग बच जाएँगे जो उसके बाद तौबा करके अपने तर्ज़े-अमल की इसलाहकर लें, अल्लाह बख्शनेवाला और रहम फ़र्मनेवाला है |मगर जिन लोगों ने ईमान लाने के बाद कुफ़्र इखतियार किया, फिर अपने कुफ़्र में बढ़ते चले गए उनकी तौबा हरगिज़ कबूल न होगी, ऐसे लोग तो पक्के गुमराह हैं | यकीन रखो जिन लोगों ने कुफ़्र इखतियार किया और कुफ़्र ही की हालत में जान दी उनमें से कोई अगर अपने आप को सज़ा से बचाने के लिए रूए ज़मीन भरकर भी सोना फिदये में दे

each one of them, that would not be accepted. These are the ones who shall have painful punishment, and shall have no helpers.	तो उसे कबूल न किया जाएगा	ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक सज़ा तैयार है और वे अपना कोई मददगार न पाएँगे	
Tafsir	